12

नीलम क्रिस्टल का पिरामिडी स्वरूप

मीनू बृजेश व्यास
असिस्टेंट डायरेक्टर, जैम टेस्टिंग लेबोरेटरी
gtl@gjepcindia.com

कुरुविंद समूह का एक और प्रमुख नीला रत्न भारतीय ज्योतिष शास्त्र के अनुसार नवरत्नों का मुख्य अंग है। जिसे नीलम, शनि, नीलमणि तथा अंग्रेजी में ब्लू सफायर के नाम से जाना जाता है और यह शनि ग्रह के लिए धारण किया जाता है। यह भी कुरुविंद परिवार का सदस्य होने के नाते ट्राइगोनल पद्धति द्वारा ही प्रकृति में उत्पन्न होता है तथा इसके क्रिस्टल भी पुखराज की भांति पिरामिडी स्वरूप के होते हैं। जिन पर आड़ी धारियां मुख्य पहचान चिह्न के रूप में अंकित होती हैं। नीलम जैसा कि इसके नाम से ही विदित हो जाता है कि नीला रंग जब कुरुविंद समूह में देखने को मिलता है तो वह नीलम कहलाता है। कंदर्प नील (मोर की गर्दन के समान नीला रंग) रंग स्वच्छता एवं वजन यदि प्राकृतिक नीलम में विद्यमान हो तो यह उच्च कोटि का बहुमूल्य रत्न माना जाता है। प्राकृतिक रूप से नीलम में एकसार नीला रंग विद्यमान होना प्रायः दुर्लभ है। यदि नीलम के भौतिक एवं प्रकाशीय गुणों का वर्णन करें तो कुरुविंद समूह का रत्न होने के कारण माणिक्य एवं पुखराज के समान स्पेसिफिक ग्रेविटी (3.98 से 4.00) तथा समान हार्डनेस (म्होस स्केल पर 9) एवं समान ही रिफ्रेक्टिव इंडेक्स (1.76-1.77) नीलम में भी पाई जाती है।

(अगले अंक में बताएंगे नीलम की श्रेणी के बारे में)